



राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

# डेली न्यूज

## एक्टिविस्ट

बात बिकलेगी तो फिर दूर तलक जाएगी?

8

मोदी की अहंकारवादी ललकार

9

'सीरिया में जो हुआ, उसकी जांच हो'

16

संस्करण : लखनऊ ■ इलाहाबाद ■ यूपी ईस्ट ■ यूपी वेस्ट

RNI NO.: UPHIN/2007/41982 ■ डाक पंजीयन : एसएसपी/एल.डब्ल्यू./एन.पी.-358



● अमृतेश श्रीवास्तव

amritesh.srivastava@gmail.com

13 जुलाई 2013 की आधी रात को जब हिंदुस्तान की लगभग पूरी आबादी सोने की तैयारी में थी वहीं देश के एक हिस्से तमिलनाडु में स्थित एक एक छोटे से शहर तिरुनेल्वेल्लि में बन रहे कुदनकुलम परमाणु बिजली घर में रोज के मुकाबले सरगर्मियां तेज थीं। देश के परमाणु वैज्ञानिकों और अभियंताओं का दस्ता एक मिशन को अंजाम देने में जुटा था और सहसा रात 11 बजकर 05 मिनट पर एक ब्रेकिंग न्यूज आई, जिसका इंतजार हर किसी को काफी समय से था। मौका था कुदनकुलम परमाणु बिजली घर के क्रिटिकैलिटी का (एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें रिएक्टर कोर में न्यूक्लियर फिशन की शुरुआत होती है) जी हां, ये वही ऐतिहासिक पल था जिस पर संपूर्ण विश्व की निगाहें लगी हुई थी। रूस के सौजन्य से निर्मित 1000 मेगावाट का यह बिजलीघर पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, तमिलनाडु प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड व एईआरबी के दिशा निर्देशों और विभिन्न प्रकार के मानदंडों पर खरा उतरने के बाद राष्ट्र को समर्पित होने की प्रक्रिया में पूरी तरह से बाहें फैलाए तैयार खड़ा था। भारत में बढ़ती बिजली समस्या के चलते कुदनकुलम परमाणु बिजली घर का बन के तैयार हो जाना और कुछ समय में ही बिजली उत्पादन में योगदान देना, कई मायनों में उभरते भारत के लिए एक नई जगमगाहट की तरह है। जिस तरह से आजादी के लगभग 67 वर्षों के बाद भी हिंदुस्तान की 40 प्रतिशत आबादी आज भी रौशनी के दीदार में अपनी आंखें संजोए बैठी है, इसके शुरू होने से शायद कुछ हद तक कमी पूरी हो सकेगी। विगत दो वर्ष पूर्व जापान के फुकुशिमा में आई भारी दैवीय विपदा के चलते वहां के परमाणु बिजलीघरों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, जिससे हमारे देश में भी परमाणु ऊर्जा और इस से जुड़े तमाम पहलुओं पर विरोध के स्वर मुखरित होने लगे। परमाणु ऊर्जा के प्रति वैचारिक मतभेद रखने वाले तमाम लोगों ने जगह जगह इसका

विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। आखिरकार काफी जद्दोजहत और सर्वोच्च न्यायालय के ऐतिहासिक फैसले के फलस्वरूप कुदनकुलम संयंत्र के शुरू होने का मार्ग प्रशस्त हो सका। देश की सर्वोच्च अदालत ने भी माना कि भारत को अगर अपनी ऊर्जा संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करना है, तो परमाणु ऊर्जा को अपना ही होगा और उसे ऊर्जा उत्पादनों के मुख्य विकल्पों में

में सैकड़ों ऐसे गांव हैं, जहां लोगों को बिजली के दर्शन तक नसीब नहीं है। ऐसे में इस परियोजना के प्रति विरोध समझ से परे है। ऐसे में आखिर हम किस तरह से विकास के लक्ष्य को हासिल कर पाएंगे। कुदनकुलम परमाणु बिजलीघर की प्रथम इकाई के शुरू हो जाने के साथ ही भारत में परमाणु बिजलीघर की संख्या बढ़कर 21 हो जाएगी। रूस के सहयोग से निर्मित ये भारत का



शामिल करना होगा। 5 मई 2013 के उस ऐतिहासिक फैसले ने शायद एक संजीवनी का काम किया और कुदनकुलम परमाणु बिजली घर परियोजना से जुड़े उन तमाम वैज्ञानिकों और अभियंताओं के चेहरों पर मुस्कान बिखर दी, जिनके अनवरत संघर्ष और मेहनत के चलते कुदनकुलम परमाणु बिजलीघर के प्रचालन का कार्य शुरू हो सका। अगर एक नजर हम दक्षिण के राज्यों पर डालें तो हमें ये जानकर हैरानी होगी की ये राज्य आज अभूतपूर्व बिजली संकट से जूझ रहे हैं। उद्योग धंधे बुरी तरह से प्रभावित हैं। बिजली के अभाव में तमाम राज्यों में विकास की मंद रफ्तार इशारा करती है कि किस तरह से लोड शेडिंग और बिजली की कटौती से लोगों का जीवनयापन दुर्लभ हो गया है और लोग अंधकार में जीवन जीने को विवश हैं। आज भी तमिलनाडु

पहला लाइट वॉटर रिएक्टर होगा, जिससे बिजली का निर्माण किया जाएगा। सुरक्षा और संरक्षा की दृष्टि से बेहतरीन व बेमिसाल खूबियों से युक्त जेनेरेशन-3 प्लस के इस रिएक्टर की संरक्षा संबंधी कई खूबियां इसे अपने तरीके का एक सर्वश्रेष्ठ रिएक्टर बनाती हैं। इस विश्व स्तरीय रिएक्टर में कोर केचर, पैसीव हीट रिमूवल सिस्टम, हाइड्रोजन री कॉम्बाइनर्स इत्यादि ऐसे कई फीचर हैं, जो इसे जनता और पर्यावरण दोनों को समान रूप से सुरक्षा प्रदान करने में मददगार साबित होंगे। प्रारंभ में इस परियोजना से 400 मेगावाट बिजली का उत्पादन किया जाएगा और धीरे-धीरे चरणबद्ध तरीके से इसकी क्षमता बढ़ाकर 1000 मेगावाट की जाएगी, जिससे कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को बिजली सुनिश्चित कराई जा सके। इसके साथ ही अगले वर्ष तक

कुदनकुलम परमाणु बिजली घर की दूसरी इकाई के भी प्रारंभ होने की संभावना है, जिससे 1000 मेगावाट की अतिरिक्त बिजली का निर्माण हो सकेगा और बड़े पैमाने पर दक्षिण समेत देश के कई राज्यों को बिजली मिल सकेगी।

एक तरफ जहां भारत में विभिन्न ऊर्जा के स्रोतों से बिजली का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है, जिसमें लगभग 68 प्रतिशत बिजली थर्मल से, 18 प्रतिशत हाइड्रो से, 12 प्रतिशत अन्य स्रोतों से जिनमें (बायो मास, सोलर और विंड प्रमुख हैं), वहीं परमाणु ऊर्जा से महज 2.3 प्रतिशत ही बिजली का उत्पादन होता है। आज संपूर्ण विश्व में थर्मल पावर से निर्मित बिजली ग्लोबल वॉर्मिंग और वातावरण में उत्सर्जित होने वाली कई हानिकारक गैसों के चलते एक गहन चिंता का विषय बनी हुई है, जबकि वहीं दूसरी तरफ परमाणु ऊर्जा एक स्वच्छ और हरित ऊर्जा का किफायती विकल्प साबित हो रही है। अगर आज हम संपूर्ण विश्व की बात करें, तो फ्रांस जैसे देश में परमाणु ऊर्जा से लगभग 80 प्रतिशत बिजली का निर्माण किया जाता है। ना केवल फ्रांस बल्कि अमेरिका, जापान, चाइना, रूस व कोरिया इत्यादि कई ऐसे विकसित देश हैं जहां पर लगभग 30-40 प्रतिशत बिजली परमाणु ऊर्जा से ही निर्मित होती है और आज इन देशों की संपन्नता और समृद्धि किसी से छिपी नहीं है। इसके विपरीत हमारे देश में वर्तमान में जहां एक ओर 3.325 लाख मेगावाट बिजली की मांग के उलट महज 2.25 लाख मेगावाट बिजली का ही उत्पादन हो रहा है। ऐसे में जरा सोचिए कि हम इस एक लाख मेगावाट के अंतर को कैसे कम कर सकेंगे? कोयले के भंडार सीमित हैं। हाइड्रो का हमने पूरी तरह से लगभग दोहन कर लिया है और सोलर और विंड की उत्पादन क्षमता, ज्यादा जगह, धूप और हवा के प्रवाह की समुचित उपलब्धता पर निर्भर होने के साथ-साथ कम किफायती और अल्प विकसित तकनीक पर आधारित है। इससे ये साफदिखाई देता है कि परमाणु ऊर्जा से बिजली निर्माण की संभावना को हम कतई नकार नहीं सकते। आज से लगभग 40-50 सालों के बाद जब परंपरागत ऊर्जा स्रोत

खत्म हो जाएंगे और हमारी आबादी दोगुनी हो जाएगी तो हम बिजली कहां से प्राप्त करेंगे? ऐसे में प्रचुर मात्रा में संसाधनों और थोरियम के भंडार के चलते क्या हमारे पास परमाणु ऊर्जा के अलावा कोई और विकल्प बचता है? एक बात तो स्पष्ट है कि जब तक हम इसको मुख्य स्रोतों के साथ नहीं शामिल करेंगे, तब तक हम सबको बिजली देने के लक्ष्य तक कभी नहीं पहुंच सकेंगे। आज हिंदुस्तान में 20 परमाणु बिजलीघर लगभग 380 रिएक्टर वर्षों के सुरक्षित प्रचालन के गौरव के साथ पिछले 44 वर्षों से अनवरत कार्यशील हैं और जिनसे लगभग 4780 मेगावाट बिजली का उत्पादन हो रहा है। आज तक हमारे देश में कोई ऐसी दुर्घटना नहीं हुई है, जिससे कोई हानि हुई हो। यहां तक की भुज में आए भूकंप और तमिलनाडु में सुनामी के बावजूद हमारे देश के परमाणु बिजलीघर चट्टान की तरह अडिगा रहे। दुनिया में आज तक परमाणु संयंत्रों से केवल तीन दुर्घटनाएं हुई हैं, जिसमें आधिकारिक रूप से महज 31 लोगों की मृत्यु हुई। यहां तक की दो वर्ष पूर्व फुकुशिमा में भूकंप और सुनामी से लगभग 22000 मौतें हुईं, लेकिन कोई भी मौत परमाणु बिजली घर से निकालने वाले रेडियेशन से नहीं हुई, जो इस बात का सबूत है कि विषम से विषम परिस्थितियों में भी परमाणु बिजलीघर सुरक्षा की दृष्टिकोण से सर्वश्रेष्ठ हैं। हमारे देश के सभी परमाणु बिजलीघरों को सुरक्षा की दृष्टि से और भी बेहतर और उन्नत तकनीक से युक्त कर दिया गया है। आज विश्व में लाखों लोगों सड़क और अन्य दुर्घटनाओं में अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं। लाखों लोग बाढ़, भूस्खलन और अन्य दैवीय आपदाओं में मारे जाते हैं। क्या हम इससे भयभीत होकर बैठ जाते हैं... शायद नहीं! इसलिए लोगों को अपने मन से डर को निकाल कर इसे खुले दिल से स्वीकार करना चाहिए। परमाणु ऊर्जा से बिजली बनाना कोई हौआ नहीं है। विश्व के तमाम विकसित राष्ट्रों ने इसे खुले दिल से अपनाया है और आज वो किस मुकाम पर हैं, शायद ये बताने की आवश्यकता नहीं है।

(लेखक न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया में मीडिया मैनेजर हैं)